प्रकाशन का 42 वां वर्ष

सरोकारी पत्रकारिता के लिए समर्पित

शैल

निष्पक्ष एवं निर्भीक साप्ताहिक समाचार

ई – पेपर

www.facebook.com/shailshamachar

प्रदेश का पहला ऑनलाईन साप्ताहिक

वर्ष 42 अंक – 44 पंजीकरण आरएनआई 26040/74 डाक पजींकरण एच. पी./93/एस एम एल Valid upto 31-12-17 सोमवार 06 – 13 नवम्बर 2017 मूल्य पांच रूपए

कुछ क्षेत्रों में वीरभद्र का विद्रोहियों की पीठ थपथपाना और कुछ में शान्ता का सक्रिय न रहना त्रिशंकु के स्पष्ट संकेत

शिमला/शैल। मतदान के बाद सामने आये आंकड़ो के अनुसार 37,21,665 मतदाताओं ने इन चुनावों में वोट डाले हैं। इनमें भी महिला मतदाताओं की संख्या 19,10,535 और पुरूषों की संख्या 18,11,126 रही है। इसमें पुरूषों का प्रतिशत 71.55 और महिलाओं का 77.76 रहा है। 6% महिलाओं का आंकड़ा अधिक रहा है। विधानसभा क्षेत्रों की गणना में 39 क्षेत्रों में महिलाओं की संख्या अधिक रही है। इसी के साथ यह भी गौरतलब है कि सिरमौर, सोलन, शिमला, कुल्लु, लाहौल स्पिति और किन्नौर के एक भी विधानसभा क्षेत्र में महिलाओं की संख्या पुरूषों से अधिक नही रही हैं। जबकि कागंड़ा, ऊना, हमीरपुर के हर क्षेत्र में महिलाओं की संख्या अधिक रही है। मण्डी में भी दस में से आठ हल्कों में महिलाओं की संख्या अधिक रही है। इन आंकड़ो से यह तो स्पष्ट हो जाता है कि चुनाव परिणाम महिलाओं से ही प्रभावित रहेंगे। लेकिन यह दिलचस्प रहा है कि आधे हिमाचल में महिलायें पुरूषों से अधिक तो आधे में कम रही हैं।

इससे यह सवाल उठना स्वभाविक है कि महिलाओं के मतदान में इस तरह का आचरण क्यों रहा है। बल्कि इस आंकड़े से यह भी उभरता है कि पूरे प्रदेश में महिलाओं का आंकड़ा 6% अधिक रहा है पुरूषों से। इससे यह भी लगता है कि आधे हिमाचल में चुनाव परिणाम महिलाओं के अधिक आने से तो आधे में कम आने से प्रभावित होंगे। इस परिदृश्य में यह समझना आवश्यक हो जाता है कि महिलाओं पर किन चीजों का चुनाव के संद्धर्भ में प्रभाव रहा होगा। इसमें सबसे पहले मंहगाई की गिनती आती है क्योंकि अभी थोड़े से ही अन्तराल में रसोई गैस सिलेण्डर की कीमत में 80 रूपये की बढौत्तरी देखने को मिली है और इस पर सबसे अधिक चिन्ता महिलाओं ने व्यक्त की है। यदि बढ़ती कीमतों के प्रति महिलाओं में आक्रोश रहा होगा तो इसका नुकसान भाजपा को होगा क्योंकि इसके लिये राज्य सरकार की बजाये केन्द्र सरकार ज्यादा जिम्मेदार है। लेकिन इसी के साथ जब कोटखाई का गुड़िया प्रकरण सामने आया तब प्रदेश में महिला सुरक्षा एक बड़े मुद्दे के रूप में उभर कर सामने आया। शिमला में हर रोज गुड़िया को न्याय मांगने वालों के धरने – प्रदर्शन देखने को मिले हैं। लेकिन जब यह प्रकरण सीबीआई को सौंप दिया गया और सीबीआई भी इसमें कुछ ठोस नही कर पायी तब गुड़िया आन्दोलन की आंच भी धीमी पड़ती चली गयी। चुनाव आने तक यह मुद्दा तो बड़ा मुद्दा बनकर नही रह पाया हालॉकि भाजपा ने इसे अपने अभियान का एक अंग अन्त तक बनाये रखा। लेकिन मतदान में पूरे शिमला, सोलन, सिरमौर में महिलाओं की भागीदारी का कम रहना एक अलग ही स्थिति खड़ी कर देता है। इसी के साथ सिरमौर, सोलन, शिमला, कुल्लु के 18 विधानसभा क्षेत्रों में पुरूष मतदाताओं की संख्या महिलाओं के अनुपात में इतनी अधिक है कि वहां पर निश्चित रूप से पुरूष ही चुनाव परिणाम को प्रभावित करेंगे। प्रदेश के 52 चुनाव क्षेत्र इन आंकड़ो के अनुसार ऐसे हैं जहां हार – जीत का फैसला यह महिला और पुरूषों का अन्तर तय करेगा। चुनावी मुद्दों के नाम पर भाजपा ने भ्रष्टाचार को जिम्मेदारी से केन्द्रित करने का प्रयास किया वह अन्त तक आते – आते उसी पर भारी पड़ गया। क्योंकि इस भ्रष्टाचार पर प्रचार के अनुरूप केन्द्रिय जांच ऐजैन्सीयां कारवाई नहीं कर पायी हैं। फिर भ्रष्टाचार के जिस तरह के आरोप कांग्रेस नेतृत्व के खिलाफ रहे हैं ठीक वैसे ही आरोप भाजपा नेतृत्व के खिलाफ भी रहे हैं। वीरभद्र सिंह ने चुनाव के अन्तिम चरण में भाजपा पर पलटवार करते हुए यह जवाब दिया कि भाजपा नेता प्रेम कुमार धूमल, अनुराग ठाकुर, वीरेन्द्र कश्यप और डा. राजीव बिन्दल भी आपराधिक मामलों में ज़मानत पर हैं। वीरभद्र के इस आक्षेप का भाजपा नेता केवल यही जवाब दे पाये थे कि उनके खिलाफ बनाये गये मामले राजनीति से प्रेरित हैं लेकिन यह जवाब देते हुए भाजपा नेता भूल गये कि यही आरोप वीरभद्र लगाते आ रहे हैं कि उनके खिलाफ बनाये गये मामले राजनीति से प्रेरित हैं।

आरोपों – प्रत्यारोपों के द्वन्द ने कांग्रेस और भाजपा को एक ही धरातल पर लाकर खड़ा कर दिया है। इसी कारण से भ्रष्टाचार को लेकर आम आदमी की नज़र में कांग्रेस और भाजपा एक ही सिक्के के दो पहलु बन कर रह जाते हैं। संभवत: इसीलिये इस चुनाव में मतदाता अन्त तक खामोश रहा है। अब मतदान के बाद भाजपा और कांग्रेस के अपने – अपने शुभ चिन्तकों कै चुनाव परिणाम सर्वे सोशल मीडिया पर हर रोज देखने को मिल रहे हैं। इन सर्वेक्षणों में जो लोग भाजपा की सरकार बनने का दावा कर रहे हैं उनके मुताबिक कांग्रेस को ऊना, देहरा सबडिविजन और हमीरपुर में एक भी सीट नही मिल रही है। लेकिन इसके बावजूद भी यह लोग भाजपा को 42 सीटें ही दे रहे हैं और भाजपा नेतृत्व के 50 प्लस के दावे को स्वयं ही नकार रहे हैं। इसी तर्ज पर कांग्रेस के समर्थकों की ओर से भी सर्वे आये हैं इनमें कांग्रेस को 36 से 38 तक सीटें दी जा रही हैं। लोग कांग्रेस की सरकार बनने को लेकर पूरी तरह आश्वस्त हैं। लेकिन जिस ढंग से महिला मतदान का पैटर्न आधे हिमाचल में अधिकता को लेकर एक जैसा है तो दूसरे आधे हिस्से में कमी को लेकर एक जैसा है उससे अन्त में यही निष्कर्ष निकलता है कि शायद एक भी दल को अपने में सरकार बनाने लायक बहुमत नहीं मिल पायेगा। इस परिणाम में चार से छ: निर्दलीयों और माकपा के जीतने की संभावना है और सरकार बनाने में इन्ही की भूमिका अहम रहेगी। क्योंकि कुछ स्थानों पर वीरभद्र ने खुलकर अपने विरोधियों को आर्शीवाद दिया है वहीं पर कुछ क्षेत्रों में शान्ता कुमार का सक्रिय न रहना त्रिशंकु के स्पष्ट संकेत माने जा रहे हैं। कुछ क्षेत्रों में वीरभद्र का विद्रोहीयों की पीठ थपथपाना और कुछ में शान्ता का सक्रिय न रहना त्रिशंकु के स्पष्ट संकेत माने जा रहे हैं।

महिला मतदान के महत्वपूर्ण आंकड़े

कई चुनाव क्षेत्रों में पुरूष और महिला मतदाताओं में इतना अन्तर है कि उसके आंकलन का सारा गणित अपने में ही कई सवाल खड़े कर देता है। महत्वपूर्ण अन्तर वाले क्षेत्र यह हैं: इनमें वोट डालने वाले पुरूषों और महिलाओं की संख्या इस प्रकार है: –

चुनाव क्षेत्र	पुरूष मतदाता	महिला मतदाता
1. भटियात	24739	27152
2. नूरपुर	30757	32514
3 .फतेहपुर	26420	31104
4. ज्वाली	29892	35783
5. देहरा	24125	29280
6. जसवां परागपुर	23212	27794
7. ज्वालामुखी	23451	29379
8. जयसिंहपुर	20986	27930
9. सुलह	30235	37873
10. नगरोटा	29433	33873
11. कांगडा	26931	30732
12. शाहपुर	27863	31548
13. धर्मशाला	26923	28588
14. पालमपुर	23213	26440
15. बैजनाथ	23319	28572
16. जोगिन्द्रनगर	27893	36907
17. धर्मपुर	20842	26109
18. मण्डी	24525	27643
19. बल्ह	26774	29718
20. सरकाघाट	24679	30945
21. भोरंज	21350	27875
22. सुजारनपुर	21728	27946
23. हमीरपुर	21458	26029
24. बड़सर	24091	31537
25. नादौन	27167	34325
26. चिन्तपुरनी	27170	29393
27. गगरेट	28119	30733
28. हरोली	30045	33493
29. ऊना में	29635	32086
30. कुटलैहड़	27255	31230
31. झण्डूता	24758	27924
32. घुमारवीं	26587	32257
33. बिलासपुर	27367	29934

राज्यपाल ने किया अन्तर्राष्ट्रीय लवी मेले का उद्घाटन

शिमला/शैल। राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने शिमला जिले के रामपुर बुशैहर में चार दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय लवी मेले का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश अपनी समृद्ध संस्कृति, रीति-रिवाजों और परम्पराओं के लिए प्रसिद्ध है जिसका प्रमाण इस बात से मिलता है कि राज्य के लोग मेलों व उत्सवों

को बहुत श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं।

राज्यपाल ने कहा कि मेले और उत्सव की राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को संजोए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं और यह जरूरी है कि पुरातन वैभव को बनाए रखने के लिए हर संभव प्रयास किये जाएं। लवी मेले का ऐतिहासिक महत्त्व है जो ना केवल व्यापारिक गतिविधियों बल्कि पौराणिक परम्पराओं के लिए भी विख्यात है।

उन्होंने कहा कि यह मेला भारत और तिब्बत के मध्य सदियों से प्रचलित एक महत्वपूर्ण व्यापार मेला है और अपनी तरह का एक गौरवशाली, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक इतिहास और हिमाचल प्रदेश की विरासत का एक अनूठा उदाहरण है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि विभिन्न जिलों के लोक कलाकार लवी मेले की सांस्कृतिक संध्याओं में अपने प्रदर्शन से सभी का मनोरंजन करेंगे।

आचार्य देवव्रत ने लोगों का आह्वान किया कि भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने के लिए सभी मिलकर आगे आएं। उन्होंने कहा कि आज लड़कियां ही क्षेत्र में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दे रहीं हैं, जिन्हें और प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्होंने युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि युवाओं को अपनी ऊर्जा सामाजिक कार्या और ज्ञानवर्द्धन में लगानी चाहिए ताकि वे समाज की भलाई में अपना योगदान दे सकें।

उन्होंने लवी मेले की समृद्ध परम्पराओं को संजोए रखने के लिए आयोजन समिति की सराहना की। उन्होंने कहा कि ऊनी कपड़े, सूखे मेवे और अन्य पारम्परिक शिल्प और मेले में प्रदर्शित उत्पाद अपने आप में अनूठे हैं। यह मेला पारम्परिक शिल्पकारों और किसानों के हित के साथ-साथ इन उत्पादों के प्रचार-प्रसार व विक्रय के लिए उपयुक्त अवसर प्रदान करता है।

राज्यपाल ने 'किन्नौरी मार्किट' का भी शुभारम्भ किया और इस अवसर पर विभिन्न सरकारी विभागों और अन्य संगठनों द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी में गहरी रूचि दिखाई।

इससे पूर्व उन्होंने रामपुर बाजार का दौरा किया और स्थानीय लोगों के साथ बातचीत की। बाजार में स्वच्छता का विशेष ध्यान रखने के लिए उन्होंने नगर परिषद् व व्यापार मंडल को बधाई दी।

उपायुक्त एवं लवी मेला आयोजन समिति के अध्यक्ष रोहन चंद ठाकुर ने राज्यपाल का स्वागत तथा मेले की गतिविधियों बारे विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने राज्यपाल को किन्नौरी टोपी, शॉल तथा स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया।

एसडीएम निपुण जिंदल ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। इस अवसर पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये।

राज्यपाल के सलाहकार शशिकान्त शर्मा, नगर परिषद् के सदस्यगण, पंचायती राज संस्थानों के प्रतिनिधि तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित थे।

मानव कल्याण समिति अर्की का युवाओं को नशे से मुक्त करने पर जोर

अर्की/शैल। मानव कल्याण समिति अर्की द्वारा 8वां सम्मान समारोह का आयोजन सामुदायिक भवन अर्की में किया गया। इस समारोह में स्थानीय अर्की तहसील में ही नही बल्कि देश विदेश में प्रदेश का नाम रोशन करने वाले डॉ. सुरेन्द्र कुमार पाल और सुखराम को उनकी प्रतिभा का लोहा मनवाने के लिए सम्मानित किया गया व उन स्कूली बच्चों को जिन्होंने अपनी परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त कर

अपने स्कूल का नाम रोशन किया उनको भी सम्मानित किया गया। मानव कल्याण समिति ने इस साल 2 बार निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन अलग अलग गाँव में लगवाया जिसमें बहुत से बच्चों और बुजुर्गो ने अपना इलाज करवाया है। उन्होंने कहा कि समिति आने वाले समय में भी ऐसे आयोजन करवाती रहेगी। समिति द्वारा जघाणा गऊशाला में चारा भिजवा कर गउओं की सेवा में भी अपनी भागीदारी दर्ज करवाई है। डॉ. पाल ने अपने सम्बोधन में कहा कि आज की युवा पीढ़ी नशे के मकड़जाल में फंसती जा रही है हमे नशे के खिलाफ जंग लड़नी चाहिये ताकि हमारे बच्चे इससे दूर रहें। हमने दिग्गल में भी कुछ समय पहले नशे पर कार्यक्रम किया था। नशा ही अपराध की जड़ है। उन्होंने समिति से आग्रह किया कि नशे पर काम करें ताकि हम अपने युवाओं को नशे से मुक्त कर सकें। अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सुख राम गांव बनिया देवी से हैं, नेशनल मास्टर ऐथेलेटिक चौम्पियनशिप में भाग लिया है और कई बार राष्ट्रिय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नाम रोशन किया। समिति ने विभिन्न स्कुलो में अच्छे अंक प्राप्त करने वाले मेधावी छात्रों को भी सम्मानित किया। मनदीप कौर रावमापा अर्की को 2100 रु का नकद पुरुस्कार, परसस्ति पत्र व् स्मृति चिन्ह भेट किया। खेम राज 1500 का नकद पुरुस्कार परसस्ति पत्र व स्मृति चिन्ह, जाग्रति रावमापा डुमेहर परसस्तिपत्र स्मृति चिन्ह, दीपिका रावमापा अर्की 2100 रु प्रस्सतिपत्र और स्मृति चिन्ह देकर समिति ने समानित किया। शिवानी रावमापा चण्डी 1500 रु प्रस्सतिपत्र व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। रावमापा अर्की 1100रु को भी प्रस्सतिपत्र व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। समिति द्वारा उन लोगो को भी सम्मानित किया गया, जिन्होंने समय समय पर स्वास्थ्य सुविधा प्रदान की हैं। इस मौके पर मानव कल्याण समिति के अध्यक्ष मनोहर लाल शर्मा, डॉ. सन्त लाल शर्मा, महासचिव बी.आर.शर्मा व समिति के सभी सदस्य व मेधावी बच्चों के माता पिता भी उपस्थित रहे।

नागालैंड के किसानों ने सीखी नौणी विवि में पहाड़ी खेती की बारीकियां

असम राइफल्स द्वारा प्रायोजित था 22 किसानों का प्रतिनिधिमंडल

शिमला/शैल। देश के पूर्वोत्तर राज्य नागालैंड के 22 किसानों का एक प्रतिनिधिमंडल ने नौणी स्थित डॉ. यशवंत सिंह परमार औद्यानिकी और वानिकी विश्वविद्यालय का दौरा किया। इस प्रतिनिधिमंडल में नागालैंड के सभी 11 जिलों से दो-दो किसान हैं,जो असम राइफल्स द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय एकीकरण यात्रा का हिस्सा हैं।

इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य पहाड़ी खेती की आधुनिक तकनीक और बारीकियों को समझना और वापिस जा कर अपने लोगों को इसके बारे में शिक्षित करना है। 44 असम राइफल्स के कमांडेंट ने 2 नवंबर को एचक्यू आईजीएआर (एन) के तत्वावधान में इस हिमाचल दौरे को रवाना किया। प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व मेजर गुलशन कुमार कर रहें है। उनके साथ असम राइफल्स के प्रशासनिक कर्मचारी भी हैं।

मेजर गुलशन ने बताया कि दौरे का उद्देश्य देश के अलग-अलग सांस्कृतिक और सामाजिक लोकाचार को एकीकृत करना है और पूर्वोत्तर के दूरदराज क्षेत्रों के किसानों को हिमाचल प्रदेश में कृषि की प्रगति और बागवानी से परिचित करना है क्यूंकि दोनों ही राज्यों की समान भू-भाग और जलवायु परिस्थितियों हैं।

उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह सारे किसान, विश्वविद्यालय में सीखी गई नवीनतम बागवानी और पहाड़ी खेती तकनीकों कों अपने प्रदेश में उपज और आय में वृद्धि करने के लिए लागू करेंगें और बढ़ावा देंगे।

इस प्रतिनिधिमंडल में किसानों की उम्र 26 से 50 वर्ष के बीच है। नौणी विवि के विस्तार शिक्षा निदेशालय ने इन किसानों की मेजबानी की और इस क्षेत्र में हो रहे विकास से अवगत किया। डॉ. अनिल सूद और डॉ. जितेंदर चौहान ने सभी किसानों को किवी ब्लॉक सहित विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के फार्म में हो रहे अनुसंधान के बारे में बताया।

दूसरे दिन, सभी किसानों ने मशोबरा स्थित क्षेत्रीय बागवानी अनुसंधान और ट्रेनिंग केंद्र का दौरा किया, जहां वैज्ञानिकों ने उन्हें सेब की खेती में बेहतर उपज के लिए सही तकनीक और पद्धति के बारे में बताया। फसल से जुड़ी बीमारियों और कीटों और उनसे प्रभावी ढंग से निपटने की तकनीक भी इन किसानों से साझा की गई।

तेंदुए को आदम खोर घोषित कर मारने के आदेश जारी

शिमला/शैल। रमेश चंद कंग प्रधान मुख्या अरण्यपाल हिमाचल प्रदेश एवं मुख्या वन्य सरंक्षक हिमाचल प्रदेश ने जानकारी दी है कि किन्नौर जिला के मोरंग तहसील में रिब्बा गांव में एक 74 वर्षीय महिला श्रीमती कमान देवी पर तेंदुए ने आक्रमण किया जिससे महिला की मृत्यु हो गई। घटना 9 नवंबर 2017 को प्रात: 8:30 बजे हुई। उन्होंने जानकारी देते हुए कहा कि वन मंडलाधिकारी किन्नौर ने मौके पर जाकर स्थिति कि जानकारी ली व इलाके में स्थानीय लोगों कि सुरक्षा हेतु उचित कदम लिए।

उन्होंने जानकारी देते हुए कहा कि परिवार को तुरंत 25,000 रुपए की फौरी रहत दी गई तथा 150000 रुपए अंतरिम राहत राशि पीड़ित परिवार को दी जाएगी।

कंग ने कहा कि उनके स्तर पर वन्य प्राणी अधिनियम 1972 के तहत तेंदुए को आदम खोर घोषित कर दिया गया है एवं उसे पकड़ने या शिकार करने के आदेश दे दिए गये है।

शैल समाचार संपादक मण्डल

संपादक - बलदेव शर्मा
संयुक्त संपादक - जे.पी.भारद्वाज
विधि सलाहकार - ऋचा
अन्य सहयोगी
भारती शर्मा
रजनीश शर्मा
राजेश ठाकुर
सुदर्शन अवस्थी
सुरेन्द्र ठाकुर
रीना

प्रदेश में शांतिपूर्ण सम्पन्न हुआ मतदान

शिमला/शैल। मुख्य निर्वाचन अधिकारी पुष्पेन्द्र राजपूत ने बताया कि प्रदेश की सभी 68 विधानसभा

क्षेत्रों में मतदात शांतिपूर्वक सम्पन्न हुआ और प्रदेश के किसी भी भी भाग से किसी अप्रिय घटना की सूचना नहीं है।

उन्होंने कहा कि राज्य मुख्यालय में प्राप्त सूचना के अनुसार प्रदेश में लगभग 74 प्रतिशत रिकार्ड मतदान दर्ज किया गया। उन्होंने कहा कि चम्बा जिला में लगभग 74 प्रतिशत, हमीरपुर में 69.50 प्रतिशत, शिमला 72.5 प्रतिशत, सोलन 77.44 प्रतिशत, मण्डी 75 प्रतिशत, कांगड़ा 72, कुल्लू 77.9, सिरमौर 82 प्रतिशत, लाहौल-स्पीति 73.4 प्रतिशत, बिलासपुर 75 तथा किन्नौर जिला में 75 प्रतिशत दर्ज किया किया गया।

उन्होंने कहा कि युवाओं तथा जनजातीय क्षेत्रों के लोगों में मतदात के प्रति खासा उत्साह देखा गया। उन्होंने कहा कि सर्वाधिक मत प्रतिशतता सिरमौर जिला में लगभग 82 प्रतिशत दर्ज की गई जबकि सबसे कम मतदान हमीरपुर जिला में लगभग 69.5 प्रतिशत रहा। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने प्रदेश के लोगों का राज्य में शांतिपूर्वक ढंग से चुनाव सम्पन्न होने तथा चुनाव प्रक्रिया में अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित बनाने के लिए उनका आभार व्यक्त किया।

ईवीएम व वीवीपैट मशीनें कड़े सुरक्षा पहरे में

केन्द्रीय अर्द्ध सैन्य बलों की 23 कम्पनियां तैनात

शिमला/शैल। मुख्य निर्वाचन अधिकारी पुष्पेन्द्र राजपूत ने कहा कि प्रदेश भर में ईवीएम तथा वीवीपैट मशीनों की सुरक्षा के लिए कड़े प्रबन्ध किए गए हैं। उन्होंने कहा कि इन मशीनों की सुरक्षा के लिए त्रि-स्तरीय सुरक्षा प्रणाली लागू की गई है । केन्द्रीय अर्द्ध-सैन्य बलों की 23 कम्पनियां इन मशीनों की सुरक्षा व निगरानी के लिए

तैनात की गई हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश भर में 48 स्थानों पर ईवीएम तथा वीवीपैट मशीनों की सुरक्षा के लिए 100 स्ट्रॉग रूम स्थापित किए गए हैं जो 24 घण्टे सीसीटीवी की निगरानी में रहेंगे।

आदर्श चुनाव आचार संहिता लागू होने के बाद 288 शिकायतें प्राप्त,278 का निपटारा

शिमला/शैल। निर्वाचन विभाग के एक प्रवक्ता ने बताया कि हिमाचल प्रदेश में आदर्श चुनाव आचार संहिता लागू होने के उपरान्त आदर्श चुनाव आचार संहिता के उल्लंघन की कुल 288 शिकायतें प्राप्त हुई जिनमें से 278 का निपटारा कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि विभाग को मतदान के दिन तीन शिकायतें प्राप्त हुई जो सभी चम्बा जिला से सम्बन्धित थी जिनका निपटारा कर लिया गया है।

उन्होंने कहा कि मुख्य निर्वाचन अधिकारी के कार्यालय में स्थापित शिकायत कक्ष में अन्य प्रकार की दो शिकायतें प्राप्त हुई जो आम लोगों द्वारा भेजी गई थी। उन्होंनें कहा कि विभाग के पास प्रदेश में चुनाव प्रक्रिया आरम्भ होने के उपरान्त इस प्रकार की कुल 205 शिकायतें प्राप्त हुई जिनमें से 90 शिकायतों का निपटारा कर दिया गया है।

हिमाचल में 74.61 प्रतिशत रिकार्ड मतदान दर्ज

District	Name of Constituency	Votes Cast	% age
Chamba	1-Churah (SC)	52094	76.13
	2-Bharmour (ST)	51452	72.23
	3-Chamba	53600	71.35
	4-Dalhousie	48638	73.21
	5-Bhatiyat	51891	73.35
Total poll % age in District Chamba		**257675**	**73.21**
Kangra	6-Nurpur	63271	76.92
	7-Indora (SC)	59139	72.23
	8-Fatehpur	57524	72.03
	9-Jwali	65675	73.61
	10-Dehra	53405	70.74
	11-Jaswan Pragpur	51006	70.30
	12-Jwalamukhi	52830	73.92
	13-Jaisinghpur (SC)	48916	63.91
	14-Sulah	68108	71.64
	15-Nagrota	63303	77.98
	16-Kangra	57663	76.38
	17-Shahpur	59411	74.80
	18-Dharmshala	55511	74.55
	19-Palampur	49653	71.92
	20-Baijnath (SC)	52071	65.64
Total poll % age in District Kangra		**857486**	**72.47**
Lahaul & Spiti	21-Lahaul & Spiti (ST)	16879	73.40
Total poll % age in District Lahaul & Spiti		**16879**	**73.40**
Kullu	22-Manali	52674	79.40
	23-Kullu	61739	75.79
	24-Banjar	53060	80.37
	25-Anni (SC)	59482	76.63
Total poll % age in District Kullu		**226955**	**77.87**
Mandi	26-Karsog (SC)	50711	75.48
	27-Sundernagar	56409	76.29
	28-Nachan (SC)	60478	78.37
	29-Seraj	62091	83.20
	30-Drang	62599	78.75
	31-Jogindernagar	64800	72.40
	32-Dharmpur	46951	64.22
	33-Mandi	52468	76.37
	34-Balh (SC)	56492	80.13
	35-Sarkaghat	55624	67.99
Total poll % age in District Mandi		**568623**	**75.21**
Hamirpur	36-Bhoranj (SC)	49225	65.84
	37-Sujanpur	49674	74.07
	38-Hamirpur	47487	69.11
	39-Barsar	55628	70.01
	40-Nadaun	61492	71.98
Total poll % age in District Hamirpur		**263506**	**70.19**
Una	41-Chintpurni (SC)	56563	73.15
	42-Gagret	58852	77.77
	43-Haroli	63538	78.96
	44-Una	61721	78.06
	45-Kutlehar	58485	74.21
Total poll % age in District Una		**299159**	**76.45**
Bilaspur	46-Jhandutta (SC)	52682	73.54
	47-Ghumarwin	58845	72.86
	48-Bilaspur	57301	74.67
	49-Sri Nainadevi ji	55296	82.04
Total poll % age in District Bilaspur		**224124**	**75.58**
Solan	50-Arki	63107	74.63
	51-Nalagarh	69153	84.27
	52-Doon	55464	88.95
	53-Solan (SC)	53999	66.65
	54-Kasauli (SC)	47882	74.86
Total poll % age in District Solan		**289605**	**77.44**
Sirmour	55-Pachhad (SC)	54863	79.84
	56-Nahan	61468	82.48
	57-SriRenuka ji (SC)	51167	78.29
	58-Paonta Sahib	60271	80.43
	59-Shillai	55143	84.18
Total poll % age in District Sirmour		**282912**	**81.05**
Shimla	60-Chopal	54789	75.20
	61-Theog	57153	73.02
	62-Kasumpti	40909	66.97
	63-Shimla (Urban)	32137	63.76
	64-Shimla (Rural)	52319	73.05
	65-Jubbal-Kotkhai	53918	80.24
	66-Rampur (SC)	52643	74.25
	67- Rohru (SC)	49560	71.83
Total poll % age in District Shimla		**393428**	**72.68**
Kinnaur	68-Kinnaur (ST)	41313	75.09
Total poll % age in District Kinnaur		**3721665**	**75.09**

	Male	Female	Third Gender	Total	% age
Registered Voters	**2531321**	**2457032**	**14**	**4988367**	
Votes Cast	**1811126**	**1910535**	**4**	**3721665**	**74.61**

योग्य सहायकों के बिना निर्णय करना बड़ा कठिन होता है। .....चाणक्य

सम्पादकीय

जी एस टी रक्त के बाद...

जीएसटी परिषद् ने 177 वस्तुओं को 28% के दायरे से बाहर करके 18% के दायरे में ला दिया है। यह फैसला अभी 15 नवम्बर से ही लागू हो जायेगा और इससे इन वस्तुओं की कीमतों में कमी आयेगी यह माना जा रहा है। जीएसटी जब से लागू हुआ था तभी से व्यापारियों का एक बड़ा वर्ग इसका विरोध कर रहा था। व्यापारी इस कारण विरोध कर रहे थे कि इससे कर अदा करने में प्रक्रिया संबधी सरलता के जो दावे किये जा रहे थे वह वास्तव में सही नही उतरे। लेकिन व्यापारी के साथ ही आम आदमी भी उपभोक्ता के रूप में इससे परेशान हो उठा क्योंकि खरीददारी के बाद कुल बिल पर जब जीएसटी के नाम पर कर वसूला जाने लगा तो उसे इस जीएसटी के कारण मंहगाई होने का अहसास हुआ। इससे पहले भी वह यही खरीददारी करता था परन्तु उस समय उसे जीएसटी के नाम से अलग अदायगी नही करनी पड़ती थी आज जब जीएसटी अलग से बिल में जुड़ता है तब वह इसका विरोध नही कर पाता है। जीएसटी को लेकर जब लोगों में नाराज़गी उभरी तब इस पर भाजपा के ही पूर्व वित्त मन्त्री रहे यशवंत सिन्हा सांसद शत्रुघ्न सिन्हा, पूर्व मन्त्री अरूणी शौरी जैसे बड़े नेताओं के विरोधी स्वर भी उभर कर सामने आ गये। राहुल गांधी ने जीएसटी को गब्बर सिंह टैक्स की संज्ञा दे दी। हिमाचल के चुनाव प्रचार अभियान में जब भाजपा के केन्द्रिय नेता प्रदेश में आये और पत्रकारा वार्ताओं के माध्यम से मीडिया से रूबरू हुए तब उन्हे जीएसटी पर भी सवालों का समाना करना पड़ा। जीएसटी पर उठे सवालों के जवाब में भाजपा नेताओं का पहली बार यह स्टैण्ड सामने आया कि इसके लिये मोदी सरकार नही बल्कि जीएसटी काऊंसिल जिम्मेदार है। भाजपा नेताओं ने इसके लिये कांग्रेस को भी बराबर का जिम्मेदार कहा और सवाल किया कि इसे वीरभद्र सरकार ने अपने विधानसभा में क्यों पारित किया?

जीएसटी नोटबन्दी के बाद दूसरा बड़ा आर्थिक फैंसला मोदी सरकार का रहा है। नोटबंदी को लागू हुए पूरा एक वर्ष हो गया है। विपक्ष ने 8 नवम्बर 2016 को काले दिवस के रूप में स्मरण किया है। पूर्व प्रधानमन्त्री डा. मनमोहन सिंह ने नोटबंदी को आर्थिक आतंक करार दिया है। नोटबंदी को लेकर मनमोहन सिंह ने जो चिन्ताएं देश के सामने रखी थी वह सब सही साबित हुई है। नोटबंदी के बाद आर्थिक विकास दर में 2% की कमी आयी है इसे रिजर्व बैंक ने भी स्वीकार कर लिया है। भाजपा ने 2014 के लोकसभा चुनावों में पहले ही मोदी को नेता घोषित कर दिया था। लोकसभा का चुनाव उनके नेतृत्व में लड़ा गया था। 2014 के लोकसभा चुनाव से पूर्व स्वामी राम देव और अन्ना आन्दोलनों के माध्यम से देश के भीतर भ्रष्टाचार और कालेधन को लेकर जो तस्वीर सामने रखी गयी थी वह एकदम भयानक और गंभीर थी। देश का आम आदमी उस स्थिति से छुटकारा पाना चाहता था। चुनावों में उसे भरोसा दिलाया गया था कि मोदी की सरकार बनने से अच्छे दिन आयेंगे। इस भरोसे पर विश्वास करके ही जनता ने मोदी के नेतृत्व में भाजपा को प्रचण्ड बहुमत दिलाकर सत्तासीन किया। लेकिन सरकार बनने के आज चौथे साल भी वह अच्छे दिनों का वायदा पूरा नही हो पाया है। आम आदमी के लिये अच्छे दिनों का पहला मानक मंहगाई होती है। मंहगाई के मुहाने पर मोदी सरकार बुरी तरह असफल रही है आज आम कहा जा रहा है कि कांग्रेस के शासनकाल में मंहगाई की स्थिति यह नही थी। आज रसोई गैस की कीमत यूपीए शासन के मुकाबले में दोगुनी हो गयी है। पेट्रोल डीजल और सारे खाद्य पदार्थो की कीमतों में भारी वृद्धि आम आदमी के सामने है। बेरोजगारी कम होने की बजाये नोटबंदी और जीएसटी जैसे फैंसले से और बढ़ी है।

कालेधन और भ्रष्टाचार के जो आंकड़े 2014 के लोकसभा चुनावों से पूर्व देश के सामने थे वह आज भी वैसे ही खड़े है। मोदी और उनके सहयोगी जो यह दावा करते आ रहे थे कि उनके शासनकाल में भ्रष्टाचार का कोई बड़ा काण्ड सामने नही आया है। उनका यह दावा आज अमितशाह और अजित डोभल के बेटों पर लगे आरोपों से एकदम बेमानी हो जाता है। जिन बानामा पेपर्ज में नाम आने के बाद पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री नवाज़ शरीफ वहां के सुप्रीम कोर्ट का फैंसला आने के बाद पद से भी हटाये जा चुके हैं। वहीं पर भारत सरकार उन पेपर्ज में जिन लोगों के नाम आये हैं उनके खिलाफ कोई मामला तक दर्ज नहीं कर पायी है। अब पैराडाईज़ पेपरज़ में तो मोदी के मन्त्री और एक राज्य सभा सांसद तक का नाम आ गया है। लेकिन इसपर भी कोई कारवाई नही होगी यह माना जा रहा है। क्योंकि जिस लोकपाल के गठन को लेकर अन्ना का इतना बड़ा आन्दोलन यह देश देख चुका है आज मोदी सरकार इतने बड़े बहुमत के बाद भी उस मुद्दे पर पूरी तरह चुप्प बैठी हुई है। इसी से सरकार की भ्रष्टाचार के खिलाफ ईनामदारी और नीयत का पता चल जाता है। यही कारण है कि कॉमन वैल्थ गेम्ज़ और 2 जी जैसे मामलों पर चार वर्षो में कोई एफआईआर तक दर्ज नही हो पायी है।

आज जब जीएसटी पर सरकार ने नये सिरे से विचार करके 177 आईटमो को 28% से बाहर करने का फैंसला लिया है भले ही यह फैंसला गुजरात चुनावों के कारण लिया गया है। फिर भी यह स्वागत योग्य है इसी तर्ज में अब सरकार को चाहिये कि नोटबंदी के बाद कैश लैस और डिजिटल होने के फैसलों को ठण्डे बस्ते में डालकर कॉरपोरेट सैक्टर पर नकेल डालने का प्रयास करें। इस सैक्टर के पास जो कर्ज एनपीए के रूप में फंसा हुआ है उसे वसूलने में गंभीरता दिखाये अन्यथा हालात आने वाले दिनों में सरकार के कन्ट्रोल से बाहर हो जायेगा यह तय है।

क्या विश्व महाविनाश के लिए तैयार है

डॉ नीलम महेंद्रा

अमेरीकी विरोध के बावजूद उत्तर कोरिया द्वारा लगातार किए जा रहे हाईड्रोजन बम परीक्षण के परिणाम स्वरूप ट्रम्प और किम जोंग उन की जुबानी जंग लगातार आक्रामक होती जा रही है।

स्थिति तब और तनावपूर्ण हो गई जब जुलाई में किम जोंग ने अपनी इन्टरकॉन्टीनेन्टल बैलिस्टिक मिसाइल का सफल परीक्षण किया।

क्योंकि न तो ट्रम्प ऐसे उत्तर कोरिया को स्वीकार करने के लिए तैयार है जिसकी इन्टरकॉंटीनेन्टल बैलिस्टिक मिसाइलें न्यूयॉर्क की तरफ तनी खड़ी हों और न ही उत्तर कोरिया अपने परमाणु कार्यक्रम बन्द करने के लिए।

इस समस्या से निपटने के लिए ट्रम्प का एशिया दौरा महत्वपूर्ण समझा

जा रहा है क्योंकि इस यात्रा में उनकी विभिन्न एशियाई देशों के राष्ट्राध्यक्षों से उत्तर कोरिया पर चर्चा होने का भी अनुमान है।

मौजूदा परिस्थितियों में चूंकि दोनों ही देश एटमी हथियारों से सम्पन्न हैं तो इस समय दुनिया एक बार फिर न्यूक्लियर हमले की आशंका का सामना करने के लिए अभिशप्त है।

निश्चित ही विश्व लगभग सात दशक पूर्व द्वितीय विश्वयुद्ध में हिरोशिमा और नागासाकी पर हुए न्यूक्लियर हमले और उसके परिणामों को भूल नहीं पाया है और इसलिए उम्मीद है कि स्वयं को महाशक्ति कहने वाले राष्ट्र मानव जाति के प्रति अपने दायित्वों को अपने अहं से ज्यादा अहमियत देंगे।

यह बात सही है कि अमेरिका 1985 से ही उत्तर कोरिया के परमाणु कार्यक्रम को बंद करने की कोशिश में लगा है। इसके बावजूद अमेरिका द्वारा उत्तर कोरिया पर लगाए गए प्रतिबंध या फिर उसकी किसी भी प्रकार की कूटनीति अथवा धमकी का असर किम जोंग पर कम ही पड़ता दिखाई दे रहा है।

ट्रम्प की चिंता समझी जा सकती है लेकिन समस्या का हल ढूंढने के लिए किम जोंग और उनकी सोच को समझना ज्यादा जरूरी है, और इसे समझने के लिए उत्तर कोरिया का इतिहास समझना आवश्यक है।

दरअसल द्वितीय विश्व युद्ध से पहले तक कोरिया पर जापान का कब्जा था। इस युद्ध में जापान की हार के बाद कोरिया का विभाजन किया गया जिसके परिणामस्वरूप उत्तर कोरिया जिसे सोवियत रूस और चीन का समर्थन मिला और दक्षिण कोरिया जिसे अमेरिका का साथ मिला ऐसे दो राष्ट्रों का उदय हुआ।

जहाँ एक तरफ अमेरिकी सहयोग से दक्षिण कोरिया आज विश्व की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और विश्व के लगभग 75% देशों के साथ उसके व्यापारिक संबंध हैं, वहीं उत्तर कोरिया आज भी एक दमनकारी सत्तावादी देश है जिस पर किम जोंग और उनके परिवार का शासन है। रूस और चीन के सहयोग के बावजूद उत्तर कोरिया का विकास सीमित ही रहा क्योंकि एक तरफ इसकी मदद करने वाला सोवियत रूस 1990 के दशक में खुद ही विभाजन के दौर से गुजर रहा था इसलिए इसे रूस से मिलने वाली आर्थिक सहायता बन्द हो गई वहीं दूसरी तरफ इस देश ने उसी दौर में भयंकर सूखे का भी सामना किया जिसमें उसके लाखों नागरिकों की मौत हुई और साथ ही देश की अर्थव्यवस्था भी बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई।

रही चीन की बात तो उसने उत्तर कोरिया के सामरिक महत्व को समझते हुए इसे केवल अमेरिका को साधने का साधन मात्र बनाए रखा। उत्तर कोरिया के साथ अपने व्यापार को चीन ने केवल अपने स्वार्थो तक ही सीमित रखा, उसे इतना भी नहीं बढ़ने दिया कि उत्तर कोरिया खुद एक सामर्थ्यवान अर्थव्यवस्था बन जाए।

नतीजन आज उत्तर कोरिया के सम्पूर्ण विश्व में केवल चीन के ही साथ सीमित व्यापारिक संबंध हैं।

इन हालातों में दुनिया को किम जोंग तर्कहीन और सनकी लग सकते हैं लेकिन विशेषज्ञों की मानें तो उनका मौजूदा व्यवहार केवल अपनी सत्ता और सल्तनत को बचाने के लिए है। क्योंकि किम ने सद्दाम हुसैन और मुअम्मर अल-गद्दाफी का हश्र देखा है।

इसलिए इन हथियारों से किम शायद केवल इतना ही सुनिश्चित करना चाहते हैं कि किसी भी देश की उन पर आक्रमण करने की न तो हिम्मत हो और न ही कोशिश करे।

अब देखा जाए तो अपने अपने नजरिये से दोनों ही सही हैं।

आज की कड़वी सच्चाई यह है कि विकसित देशों की सुपर पावर बनने की होड़ और उनकी राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं ने वर्तमान परिस्थितियों को जन्म दिया है।

इन हालातों में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि जब विभिन्न देशों के राष्ट्राध्यक्ष इस समस्या का समाधान ढूंढने के लिए एक साथ बैठेंगे तो वे किसका हल तलाशेंगे, 'समस्या' का या फिर 'किम जोंग' का?

इस प्रश्न के ईमानदार उत्तर में ही शायद समस्या और उसका समाधान दोनों छिपे हैं।

इसके लिए आवश्यक है कि सर्वप्रथम चर्चा में शामिल होने वाले राष्ट्र खुद को सुपर पावर की हैसियत से नहीं पृथ्वी नाम के इस खूबसूरत ग्रह के संरक्षक के रूप में शामिल करें।

ईश्वर की बनाई इस धरती और उसमें पाए जाने वाले जीवन का वे एक हिस्सा मात्र हैं मालिक नहीं इस बात को समझें।

अपनी महत्वाकांक्षाओं के अलावा आने वाली पीढ़ियों के प्रति भी उनके कुछ फर्ज हैं इस तथ्य को स्वीकार करें।

अवश्य ही हममें से कोई भी अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक ऐसा उजड़ा चमन छोड़ कर नहीं जाना चाहेगा जहाँ की हवा, पानी, पेड़-पौधे, फल, अनाज, मिट्टी सभी इस कदर प्रदूषित हों चुके हों कि इस धरती पर हमारे बच्चों के लिए अस्तित्व का संघर्ष ही सबसे बड़ा और एकमात्र संघर्ष बन जाए।

यह बात सही है कि हथियारों की दौड़ में हम काफी आगे निकल आए हैं लेकिन उम्मीद अब भी कायम है कि 'असंभव कुछ भी नहीं'।

'जीना है तो हमारे हिसाब से जियो नहीं तो महाविनाश के लिए तैयार हो जाओ' यह रवैया बदलना होगा और 'चलो सब साथ मिलकर इस धरती को और खूबसूरत बनाकर प्रकृति का कर्ज चुकाते हैं', इस मंत्र को अपनाना होगा।

जरूरत है सोच और नजरिया बदलने की परिस्थितियां अपने आप बदल जाएंगी।

हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद् के बढ़ते कदम

देश के निर्यात क्षेत्र में हस्तशिल्प उत्पादों की अहम भूमिका है। वर्ष दर वर्ष देश के हस्तशिल्प उत्पादों में पश्चिमी और अन्य देशों की रूचि में लगातार वृद्धि हो रही है। वर्ष 2016 – 17 के दौरान भारत से कुल 24,392.39 करोड़ रूपये के हस्तशिल्प उत्पादों का निर्यात किया गया। गत वर्ष के मुकाबले हस्तशिल्प निर्यात में 13.15 प्रतिशत की वृद्धि दर की गई। देश भर में करीब 6 करोड़ लोग हस्तशिल्प और उससे संबद्ध क्षेत्रों में कार्यरत है। हस्तशिल्प क्षेत्र का महत्व इस बात से भी प्रतीत होता है कि बड़े उद्योगों की तुलना में हस्तशिल्प क्षेत्र में बहुत कम निवेश के साथ बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर प्रदान करने की अहम क्षमता है।

हथकरघा और हस्तशिल्प क्षेत्र देश के सबसे ज्यादा रोजगार देने वाले क्षेत्रें में शामिल हैं। वस्त्र मंत्रालय की वित्त वर्ष 2016 – 17 की सालाना रिपोर्ट के मुताबिक हथकरघा और हस्तशिल्प क्षेत्र ने क्रमशः 43.31 लाख और 68.86 लाख लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया है। इन दोनों क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण उत्पादों के निर्यात से बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा की आय भी प्राप्त होती है। इसके साथ ही हथकरघा और हस्तशिल्प भारत की विरासत का मूल्यवान और अभिन्न अंग है, जिसे सरंक्षित रखने और प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है।

–राकेश कुमार–

हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद् (ईपीसीएच) देश में हस्तशिल्प निर्यात और दुनियाभर में हस्तशिल्प उत्पादों की ब्रांडिंग बनाने के लिए नॉडल संस्था है। देशभर से हस्तशिल्प उद्योग से जुड़े 11 हजार से अधिक संस्थाएं और

व्यक्ति हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद् के सदस्य है।

हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद् वार्षिक दो प्रमुख मेलों का आयोजन करती है जिनसे हस्तशिल्प निर्यात को प्रोत्साहन मिलने के साथ–साथ हस्तशिल्प उत्पादों को संपूर्ण विश्व के समक्ष बेहतर प्रस्तुति का अवसर प्राप्त होता है।

ग्रेटर नोएडा में 44वें भारतीय हस्तशिल्प और उपहार मेले का आयोजन इसकी एक कड़ी था। इसका उद्घाटन केंद्रीय वस्त्र एवं सूचना और प्रसारण मंत्री स्मृति ईरानी ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में वस्त्र मंत्री ईरानी ने हस्तशिल्प निर्यात को बढ़ावा देने में हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद् की भूमिका की सराहना की। उन्होंने कहा कि हस्तशिल्प के निर्यात में वर्ष दर वर्ष वृद्धि हुई है और यह 2016 – 17 में 13.15 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 24.392 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। उन्होंने ईपीसीएच द्वारा कारीगरों के बच्चों की शिक्षा के लिए कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व कार्यक्रम के अंतर्गत शुरू की गई योजनाओं की सराहना की। यह योजना ओपन स्कूलों के जरिये कारीगरों के बच्चों को शिक्षा में पूरी सहायता प्रदान करती है। इसमें 75 प्रतिशत खर्च ईपीसीएच द्वारा तथा 25 प्रतिशत निर्यातक सदस्य द्वारा उठाया जाएगा।

वस्त्र मंत्री ईरानी ने ईपीसीएच की डिजाइन पंजीकरण योजना शुरू करने के लिए सराहना की। इस योजना से सदस्य निर्यातक बिना किसी परेशानी के डिजाइन का पंजीकरण करा सकेंगे। उन्होंने कहा कि ईपीसीएच डिजाइन सेवाएं बड़े स्तर पर क्षेत्र की मदद करेंगी और हस्तशिल्प का निर्यात बढ़ेगा। जिससे कारीगरों के लिए रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। ईरानी ने प्रधानमंत्री की पूर्वोत्तर क्षेत्रो को प्रोत्साहन देने की परिकल्पना को ईपीसीएच द्वारा प्रभावी रूप से क्रियान्वयित करने के लिए परिषद् की सराहना की। ईपीसीएच पूर्वोत्तर क्षेत्र के हस्तशिल्प और हथकरघा विकास के लिए एक समन्वित कार्यक्रम का संचालन कर रहा है, जिसके अंतर्गत डिजाइन, विपणन और कौशल विकास संबधी प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा।

केंद्रीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गिरिराज सिंह ने हस्तशिल्प क्षेत्र के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि हस्तशिल्प क्षेत्र देश में रोजगार प्रदान करने वाले सबसे बड़े क्षेत्र में से एक है और हस्तशिल्प क्षेत्र के भागीदारो के बीच वैश्विक हस्तशिल्प निर्यात में भारत की हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है। विश्व भर में भारतीय हस्तशिल्प उत्पादो की मांग में निरंतर वृद्धि होने के बाद भी हस्तशिल्प निर्यात बाजार में भारत की केवल पांच प्रतिशत भागीदारी है।

मेले के दौरान पूर्वोत्तर राज्यो और जोधपुर के हस्तशिल्प कलस्टर पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया। इनमें जोधपुर के कारीगरो ने चमड़े की कढ़ाई, सींग, टाई एवं डाई शिल्प, कढ़ाई एवं ऐप्लीक, हाथ ब्लॉक छपाई, पंजा दरी, धातु कला उत्पाद और काष्ठ शिल्प से जुड़ी अपनी शिल्प कला का प्रदर्शन कर सबका मन मोह लिया।

मेले के दौरान अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी से लघु और भविष्य के उद्यमियों को प्रोत्साहन मिलेगा। इससे अन्य व्यक्तियों को उत्पाद डिजाईन और नए उत्पादो के प्रति प्रोत्साहन मिलेगा करेगा ताकि वे भी अंतर्राष्ट्रीय व्यापारियों से जुड सकें।

प्रौद्योगिकी उन्नयन के बारे में अगले पांच वर्ष के लिए ईपीसीएच ने

विजन डाक्यूमेंट तैयार किया है। ईपीसीएच ने हाल ही में डिजाईन और उत्पाद विकास प्रौद्योगिकी मिशन शुरू किया है।

ईपीसीएच ने हमेशा से पूर्वोत्तर राज्यो, अनुसूचित जाति और जनजाति और महिला उद्यमियों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया है। इसी नीति के अनुरूप लघु, छोटे और मझौले क्षेत्र के उद्यमी निर्यातकों की गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम

लिमिटेड और ईपीसीएच के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इस समझौता ज्ञापन का उद्देश्य विपणन प्लेटफॉर्म, व्यापार प्रतिनिधिमंडल के दौरे और घर, जीवनशैली, फैशन, फर्नीचर और सजावटी उत्पादों इत्यादि क्षेत्रो में उद्यमियों को प्रशिक्षण प्रदान करना है।

12 से 16 अक्टूबर तक चला यह मेला व्यापारिक दृष्टि से सफल रहा। मेले में 3150 करोड़ रूपये की व्यापारिक पूछताछ की गई। इसके साथ ही इस वर्ष 100 से अधिक देशों के खरीददारों ने मेले का दौरा किया जबकि गत वर्ष 88 देशों से खरीददार मेले में पहुंचे थे। इसके साथ ही इस वर्ष मेले में प्रदर्शकों की संख्या बढ़कर लगभग तीन हजार तक पहुंच गई। मेले में 14 उत्पाद श्रेणियों में विभिन्न हस्तशिल्प उत्पादों का प्रदर्शन किया गया था। इनमें प्रमुख रूप से घर, जीवन शैली, फैशन, हस्तशिल्प और फर्नीचर में दो हजार से अधिक उत्पादों का प्रदर्शन किया गया। इस वर्ष विदेशों से खरीदारों और उनके प्रतिनिधियों की भागीदारी बढ़कर 5995 तक पहुंच गई जबकि गत वर्ष यह 5586 थी। घरेलू व्यापारिक दौरा करने वालों की संख्या इस वर्ष 765 रहीं। मेले के दौरान 3150 करोड़ रूपये की व्यापारिक पूछताछ की गई और इसमें गत वर्ष के मुकाबले 6.78 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई।

इस वर्ष अमेरिका से सबसे अधिक 751 खरीदार, जर्मनी से 259, ब्रिटेन से 295, ऑस्ट्रेलिया से 275, फ्रांस से 282, जापान से 194 और चीन से 67 खरीदार मेले में पहुंचे थे। इस वर्ष पहली बार जॉर्डन, कतर, लेबनॉन, सऊदी अरब, तुर्की, उजबेकिस्तान, हंगरी, मंगोलिया, लीबिया और केन्या से खरीदार मेले में पहुंचे। मेले के दौरान पुनः उपयोग किए उत्पादों का सजावट के लिए प्रयोग सबके आकर्षण का केंद्र बना हुआ था।

पसूका

लाल दलीचा बिछा देश के पहले मतदाता सौ साल के श्याम सरन की खातिर

शिमला/शैल। आजाद भारत पहले मतदाता सौ साल के श्याम सरन नेगी ने एक बार फिर अपना मत डाल कर दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की ताकत की तस्दीक की है। उनके जज्बे व लोकतंत्र में उनके लिए खास इंतजाम किए थे। मतदान केंद्र पर पहुंचने पर जिला चुनाव अधिकारी व जिला उपायुक्त डाक्टर नरेश कुमार लट्ठ और उनकी पत्नी तृप्ता लट्ठ ने श्याम सरन नेगी की अगुवाई की। इस मौके पर उन्हें खास

भरोसे को सलाम करते हुए चुनाव आयोग ने उनके लिए लाल दलीचा बिछाया। ये पहली बार है कि देश के किसी मतदाता के लाल दलीचा बिछा हो। चुनाव आयोग ने उनके तौर किन्नौर की परंपरागत टोपी 'तमका' पहनाई गई। इसके अलावा शॉल भी पहनाई गई। जिला उपायुक्त व उनकी पत्नी उन्हें मतदान केंद्र के भीतर ले गए।

जहां पर श्याम सरन नेगी ने अपने मतदान का इस्तेमाल किया। श्याम सरन नेगी ने 29वीं बार अपने मत का प्रयोग किया। श्याम सरन नेगी ने आजादी के बाद पहली बार 1951 में हुए आम चुनावों में पहली बार मतदान किया था। तब से लेकर अब तक वो लगातार मतदान करते रहे हैं। 2010 में देश के तत्कालीन मुख्य चुनाव आयुक्त नवीन चावला चुनाव आयोग की हीरक जयंती पर खास तौर पर उनके घर कल्पा गए थे और उन्हें सम्मानित किया था।

जिला संपर्क अधिकारी ममता नेगी ने बताया कि सुबह 11 बजे के करीब चुनाव आयोग का विशेष वाहन कल्पा में उनके घर पहुंचा व जिला युवा खेल अधिकारी लाल सिंह नेगी उन्हें कल्पा के मतदान केंद्र 2 में ले गए। यहां पर उन्हें लाल दलीचा बिछाया गया और किन्नौरी टोपी व शॉल पहना कर उन्हें सम्मानित किया गया। मतदान के बाद उन्हें विशेष वाहन से घर छोड़ा गया।

वीरभद्र, विक्रमादित्य और धूमल ने डाला वोट पर किसी और को गया

शिमला/शैल। मौजूदा मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह, उनके पुत्र विक्रमादित्य सिंह ने रामपुर में और भाजपा की ओर से मुख्यमंत्री पद के

लिए घोषित प्रत्याशी प्रेम कुमार धूमल व उनके परिवार के सदस्यों ने समीरपुर में वोट डाले। लेकिन दिलचस्प ये हुआ कि वीरभद्र सिंह ने जो वोट डाला वो उनके खाते में नहीं गया इसी तरह विक्रमादित्य के साथ भी हुआ और प्रतिभा सिंह भी न तो

अपने पति और न अपने पुत्र के लिए वोट डाल पाई। इन तीनों के वोट रामपुर में हैं। जबकि वीरभद्र सिंह अर्की हलके से चुनाव मैदान में है और विक्रमादित्य शिमला ग्रामीण से चुनाव लड़ रहे हैं।

इसी तरह भाजपा ने पूर्व मुख्यमंत्री प्रेम कुमार धूमल का भी हलका बदल दिया था। उन्हें हमीरपुर के बजाय सुजानपुर से लड़ाया गया। जबकि धूमल का वोट हमीरपुर हलके के समीरपुर में हैं। धूमल को उनके बेटों भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर, छोटे पुत्र अरुण धूमल व बाकी सदस्यों के वोट भी नहीं मिलें। इन सबके वोट सुजानपुर के बजाय समीरपुर में हैं। इस बार के चुनाव में ये दिलचस्प हैं। हालांकि वीरभद्र सिंह व उनके परिवार को वोट हमेशा ही किसी को ओर गया है। पहले वो रोहडू से चुनाव लड़ते थे। जबकि उनका महल रामपुर में है। रोहडू के बाद उन्होंने अपना लिए शिमला ग्रामीण् सीट चुनी और इस बार वो अर्की से चुनाव मैदान में है।

कांग्रेस से भाजपा में गए दूरसंचार घोटाले के दोषी सुखराम व मंडी से भाजपा प्रत्याशी अनिल शर्मा ने मंडी में वोट डाला। इसके अलावा वीरभद्र सरकार के सभी मंत्रियों ने सुबह ही वोट डाल दिया जबकि भाजपा के बड़े नेता सुबह 11 बजे से पहले मतदान केंद्रों पर पहुंच चुके थे।

माकपा प्रत्याशी राकेश सिंघा ने कोटगढ़ में पूर्व केंद्रीय मंत्री आनंद शर्मा ने शिमला के केल्टी में वोट डाला। कई जगहों पर इवीएम में खराबी आने के कारण देरी से मतदान शुरू हो पाया। फिलहाल कहीं से भी हिंसा की जानकारी नहीं है।

चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर सवाल

शिमला/शैल। चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर सवाल उठाते हुए गैर सरकारी संस्था सोशल वेल्फेयर काउंसिल ऑफ इंडिया ने आयोग को राजनीतिक दबाव से मुक्त करने के लिए सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाने का एलान किया है। काउंसिल के चेयरमैन राजेश्वर सिंह नेगी ने संवाददाताओं से कहा कि चुनाव आयोग की निष्पक्षता संदेह में रही है। आयोग ने एग्जिट पोल पर तो पाबंदी लगा दी लेकिन ओपिनियन पोल पर कोई पाबंदी नहीं है। ये गलत है ऐसा नहीं होना चाहिए।

इस बार हिमाचल व गुजरात के चुनाव एक साथ होने थे, लेकिन हिमाचल के चुनाव पहले घोषित कर दिए व प्रचार के लिए कुल 12 ही दिन मिले। जबकि प्रदेश में अधिकांश हलके दूर दराज में हैं और अधिकांश प्रचार पैदल होता है। दो जिला कबाइली हैं। ऐसे में कोई भी प्रत्याशी अपने मतदाताओं से कैसे संपर्क कर सकता है। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग ये नहीं बता पा रहा है कि हिमाचल के चुनाव नामांकन वापस लेने के बाद 15 दिनों में कैसे निपटा दिए गए। जबकि मतगणना करीब सवा महीना बाद हो रही है। जबकि दूसरी ओर गुजरात में चुनावों की तारीखें देरी से घोषित की गई व वहां पर प्रचार के लिए 40 दिन का वक्त दिया गया है।

नेगी ने कहा कि चुनाव आयोग लोकसभा व विधानसभा के चुनाव एक साथ कराने का दावा कर रहा है। जबकि हाल ही में हुए उतरप्रदेश विधानसभा का चुनाव सात चरणों में कराया गया। निश्चित तौर पर ये सता में पार्टी से प्रभावित होकर ही हुआ होगा।

नेगी ने कहा कि उन्होंने प्रधानमंत्री को भी चिट्ठी लिखी है अगर सरकार कुछ नहीं करती है तो आने वाले पंद्रह दिनों में सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटा देंगे। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग की स्वायतता बहाल करने के लिए मुख्य चुनाव आयुक्त व बाकी दो आयुक्तों की नियुक्ति व उन्हें हटाने की प्रक्रिया देश के मुख्य न्यायाधीश की तरह होनी चाहिए।

चुनावों में मतदाताओं को लुभाने के लिए शराब, पैसा जैसे हथकंडों को अपनाने वाले प्रत्याशियों के खिलाफ जांच व कार्रवाई करने व उन्हें अयोग्य ठहराने की शक्तियां चुनाव आयोग के पास होनी चाहिए। नोटा को ज्यादा प्रभावी बनाने की जरूरत है। इसके अलावा दोषी व अपराधी प्रत्याशियों के चुनाव लड़ने पर पाबंदी लगनी चाहिए। इस तरह की सिफारिशें इलेक्ट्रॉल रिफार्म कमेटी की रिपोर्ट में की गई हैं।

उन्होंने कहा कि प्रत्याशियों की ओर से संपति को लेकर भरे जाने वाले शपथपत्रों में आय के सोर्स का भी जिक्र होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि वो इन तमाम बिंदुओं पर वो सुप्रीमकोर्ट में जनहित याचिका दायर करेंगे या पहले से चुनाव सुधारों को लेकर सुप्रीम कोर्ट में लंबित याचिकाओं में वो पार्टी बनने के लिए अर्जी देंगे।

राजेश्वर नेगी हिमाचल में पर्यावरण व वन्य प्राणियों की सुरक्षा को लेकर सक्रिय रहे हैं व बंदरों की कलिंग के खिलाफ उनकी संस्था हाईकोर्ट गई थी।

हिमाचल 19वां राज्य होगा जहां पर भाजपा चुनाव जीतेगी:अनुराग ठाकुर

शिमला/शैल। सांसद अनुराग ठाकुर ने समीरपुर में मतदान करने के उपरान्त पत्रकारों से अनौपचारिक बातचीत में कहा की भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह और प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी की जोड़ी ने पूरे देश में भाजपा को 18 जगह जिताया है और अब हिमाचल 19वां राज्य होगा जहां पर भाजपा चुनाव जीतेगी। उन्होंने कहा पार्टी का हर काम रणनीति के तहत होता है। चुनाव जब पीक पर होता है तब नेता आता है। प्रदेश में धूमल जी की घोषणा के बाद नया बदलाव और उठाव चुनाव में आया है। सांसद ने कहा की पूर्व मुख्यमंत्री पूरे प्रदेश में विकास पुरुष के नाम से जाने जाते हैं, उनके नेतृत्व में पूर्व की सरकारों में प्रदेश को 85 अवार्डों से सम्मानित किया गया, हिमाचल नम्बर वन राज्य बना। जिसका लाभ इन चुनावों में मिला है। जनता वापिस विकास देखना चाहती है।

अनुराग ठाकुर ने कहा जिस प्रदेश का मुख्यमंत्री जमानत पर हो, चिंता का विषय है, जहां पर अपराध, बलात्कार, या माफिया राज को बढ़ावा मिला हो, इन कलंको से उस राज्य की जनता मुक्ति चाहती है। देवभूमि हिमाचल

प्रदेश के ईमानदार मेहनती लोग बहुत समझदार हैं और जानते हैं की प्रदेश का हित क्या है, और वह विकास के लिए भाजपा को वोट देंगे।

अनुराग ठाकुर ने कहा की प्रदेश की जनता ने पांच साल एक नयी और अच्छी सरकार चुनने का इन्तजार किया था अब वो दिन आया है, क्यूंकि पांच साल प्रदेश में लोगों ने कांग्रेस का माफिया राज देखा है, देखा है की कांग्रेस ने कैसे प्रदेश को लूटा, प्रदेश के संसाधन लुटे गये हैं, प्रदेश पचास हजार से ज्यादा के कर्जे तले दबा है, भाजपा का अजेंडा अच्छी और साफ सुथरी पारदर्शी सरकार देने का है, केंद्र में मोदी जी देश को बेहतर ढंग से आगे लेकर जा रहे हैं, लोग प्रदेश में अनुभवी, वरिष्ठ और सुलझे हुए नेता को देखना चाहती है, जो प्रदेश को आगे ले जाए, केंद्र सरकार की योजनाओं को लागू कर सके। अनुराग ठाकुर ने कहा की हिमाचल प्रदेश छोटा राज्य है और भाजपा प्रदेश के सभी क्षेत्रों में विकास करती है। भाजपा की पूर्व सरकारों के कार्यकाल को देखे हैं तो बागवानी क्षेत्र के लिए भाजपा ने समर्थन मूल्य को बढ़ाया था। भाजपा ना तो क्षेत्रवाद की राजनीति करती है और न ही तोड़ने का काम करती है। पूरे प्रदेश के सर्वांगीण विकास में विशवास रखती है। अनुराग ठाकुर ने आश्वस्त किया की भाजपा की सरकार में बागवानी, पर्यटन, इन्फ्रास्ट्रक्चर, कृषि के क्षेत्र में प्रमुखता से काम करेंगे। अधिक से अधिक रोजगार पैदा करंगे, स्वरोजगार के अवसर पैदा करेंगे। जिन क्षेत्रों को कांग्रेस ने पांच साल उपेक्षित रखा वहां अच्छा कार्य करेंगे। नये पर्यटन स्थलों के निर्माण और वहां इन्फ्रास्ट्रक्चर के निर्माण पर फोकस रहेगा। पर्यटक सुविधाजनक तरीके से प्रदेश में हर कोने तक पहुंचे ऐसी व्यवस्था की जायेगी, एडवेंचर स्पॉट, वाटर सपोर्ट, ईकोस्पोर्ट आदि को बढ़ावा दिया जायेगा। पहाड़ों में सुविधाएं दीं जायेंगी ताकी ज्यादा पर्यटक प्रदेश में आयें, और प्रदेश की आर्थिकी को मजबूत हो।

''आधार'' पर वार क्यों?

Dr RP Srivastava

आधार की अनिवार्यता के खिलाफ अब भाजपा के नेता भी आवाज उठाने लगे हैं । भाजपा के वरिष्ठ नेता सुब्रह्मण्यम स्वामी ने आधार पर तीखी टिप्पणी करते हुए इसे राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बताया है। स्वामी ने यह भी कहा कि मुझे उम्मीद है कि सुप्रीम कोर्ट आधार की अनिवार्यता के मामले को खारिज कर देगी। उन्होंने आधार संस्था भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (यू आई डी ए आई), को समाप्त करने की वकालत करते हुए इसे विधवंसक बताया। उनके अनुसार, आधार डाटा फीडिंग का काम विदेशी कंपनियां करती हैं, जिससे देश की सुरक्षा को खतरा है। इस बाबत वे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को लिखेंगे। दूसरी ओर आधार को लेकर केंद्र सरकार की समस्याएं और बढने वाली हैं, क्योंकि इसके खिलाफ दायर दो दर्जन से अधिक याचिकाओं पर सुप्रीमकोर्ट इस महीने के अंतिम सप्ताह में सुनवाई आरंभ करेगी। सुप्रीम कोर्ट ने मोबाइल सिम को आधार से अनिवार्य रूप से जोड़ने के खिलाफ दायर एक अन्य याचिका को सुनवाई हेतु स्वीकार कर ली है, जबकि बंगाल सरकार की याचिका को ठुकरा दिया है। कोर्ट का मानना है कि कोई भी राज्य सरकार केंद्र के कदम को चुनौती नहीं दे सकती। इसलिए पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की याचिका खारिज कर दी गई। सुश्री बनर्जी ने पहले ही आधार को मोबाइल नंबर से लिंक कराने को लेकर अपना विरोध जता चुकी हैं। अब सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ इन सब मामलों की जल्द सुनवाई करेगी। उल्लेखनीय है कि नौ सदस्यीय संविधान पीठ ने अपने फैसले में कहा था कि निजता का अधिकार संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकार है। आधार की वैधानिकता को चुनौती देने वाली अनेक याचिकाओं में दावा किया था कि इससे निजता के अधिकार का हनन होता है। सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश दीपक मिश्रा, न्यायमूर्ति ए एम खानविलकर और न्यायमूर्ति डी वाई चन्द्रचूड की तीन सदस्यीय खंडपीठ के समक्ष अटार्नी जनरल के के वेणुगोपाल ने कहा कि केन्द्र इस मामले में बहस के लिए तैयार है और अब इस मामले में उनका पक्ष सुने बगैर किसी अन्य अंतरिम आदेश की आवश्यकता नहीं है। इसके बाद ही न्यायालय ने कहा कि संविधान पीठ नवंबर के अंतिम सप्ताह में इस पर सुनवाई शुरू करेगी। केन्द्र की पहल का विरोध करते हुए याचिकायें दायर करने वाले याचिकाकर्ताओं में से एक की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता गोपाल सुब्रह्मण्यम ने कहा कि शीर्ष अदालत ने पहले आधार मामले में कई आदेश पारित किये थे और कहा था कि यह विशुद्ध रूप से स्वैच्छिक कृत्य है और कोई भी नागरिक सरकार की योजनाओं का लाभ प्राप्त करने के लिए यह कार्ड रखने को बाध्य नहीं होगा। इस आदेश का पालन नहीं किया गया। उल्लेखनीय है कि 30 मार्च 2017 को दक्षिण एशियाई विदेशी संवाददाता क्लब, नई दिल्ली ने एक प्रेस कांफ्रेंस कर बायोमेट्रिक विशिष्ट पहचान संख्या (आधार) को संविधान और कानून की अनदेखी करार दिया। इसमें इस बात पर चिंता व्यक्त की गई कि राजनीतिक विरोध के बावजूद इस मामले में खामोशी आश्चर्यजनक है।

अभी पिछले दिनों झारखंड के सिमडेगा जिले में संतोषी नामक लड़की की मौत आधार के अभाव में भूख से हो गई । फिर केन्द्रीय खाद्य मंत्री राम विलास पासवान ने ''आधारहीन'' लोगों को भी राशन देने का ऐलान किया, परन्तु अभी तक ऐसी सूचना उपलब्ध नहीं है कि ऐसे लोगों को भी राशन दिया जा रहा है, जिनके पास आधार कार्ड नहीं है। अब सरकार भी कहीं न कहीं यह महसूस कर रही है कि इसकी अनिवार्यता/बाध्यता जनता के लिए मुश्किलें खड़ी कर रही है। यह वही कार्ड है, जो दुनिया के कई देशों में विफल हो चुका है। यह जी एस टी की भांति सरकार गिरानेवाला नहीं है, किन्तु हमारे देश में कांग्रेस सरकार के पतन में इसका बड़ा हाथ रहा है। उल्लेखनीय है कि 28 जनवरी 2009 को कांग्रेस नीत यूपीए सरकार ने गैर कानूनी ढंग से बिना संसद द्वारा पारित कदम को जबरन नागरिकों पर थोपा था और रसोई गैस सिलिंडर के लिए आधार कार्ड की अमलन बाध्यता करके पूरे देश में नोटबंदी जैसी लाइनें लगवा दीं। सिर्फ दिखावे के तौर पर कहा जाता रहा कि यह ऐच्छिक है। लेकिन व्यावहारिक रूप में इसे अनिवार्य बना दिया गया। सभी ने देखा, चुनाव में कांग्रेस का खेमा उखड़ गया। भाजपा के ही प्रस्ताव पर कांग्रेस ने यह कदम उठाया था, जो कांग्रेस के लिए भस्मासुरी साबित हुआ। कहते हैं कि भाजपा के किसी सज्जन ने एक अंग्रेजी उपन्यास में ऐसे कार्ड की कल्पना की कल्पना के बारे में पढा था, जो अनोखा और चमत्कारिक था। फिर इसे ही भाजपा ने प्रस्तावित कर दिया, जबकि कांग्रेस एक दूसरा पहचान पत्र लाना चाहती थी, जिसके बनाने का एक चरण पूरा हो गया था और कांग्रेस के बहुद्देशीय कार्ड पर करोड़ों रुपए फूंके जा चुके थे। हमारे देश के राजनीतिक इतिहास में एक समय ऐसा भी आया था, जब भाजपा आधार का विरोध करने लगी थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्वयं आधार कार्ड के घोर विरोधी थे। ऐसा समय आया था, जब नरेंद्र मोदी ने खुलकर आधार योजना का विरोध किया था। जब नरेंद्र मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री थे, तब उन्होंने आधार कार्ड के लिये तत्कालीन यूपीए सरकार पर हमला करते हुए कहा था कि अगर वे लोग इसी तरह से अंधाधुंध आधार बांटते रहेंगे तो हमारे गुजरात में आतंकियों के घुसने का खतरा बढ़ जाएगा। मोदी ने तब कहा था कि आज कांग्रेस वाले जिस आधार कार्ड को लेकर इतना नाच रहे हैं, उसे देख कर लगता है कि देश के लोगों को पता नहीं कौन सी जड़ीबूटी बांट रहे हैं। नरेंद्र मोदी ने तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को कटघरे में खड़ा करते हुए कहा था कि ये आधार कार्ड से लाभ किसको मिलेगा? आधार कार्ड से क्या बाहरी लोग हमारे देश के नागरिक नहीं बन जाएंगे? परन्तु केन्द्रीय सत्ता पाते वे आधार के सबसे बड़े पैरोकार हो गए, यहाँ तक कि जब लोकसभा में विपक्षी दलों ने कहा कि जब यह मामला सुप्रीमकोर्ट कोर्ट में विचाराधीन है ,तो कानून बनाने कि जल्दी क्या है? तो वित्त मंत्री अरुण जेटली ने साफ कह दिया कि उन्हें ऐसा करने से कोई नहीं रोक सकता। बाद में एक वित्त विधेयक को कानूनी जामा पहनाकर इस कम को आगे बढ़ाया गया, लेकिन इस कानून के खिलाफ कांग्रेस ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर कर रखी है। इस पूरे मामले पर अभी सुप्रीम कोर्ट का फैसला आना बाकी है।

वास्तव में आधार का बायोमेट्रिक होना आपत्ति का बड़ा विषय बना हुआ है। अब भाजपा नेता डा.सुब्रह्मण्यम स्वामी इसे राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा यूँ ही नहीं मान रहे हैं। वास्तव में जिन एजेंसियों द्वारा आधार योजना में डाटा फीड का काम वर्षो से संपन्न कराया जा रहा है, वे संदेह के घेरे में हैं । चूँकि आधार कार्ड का निर्माण नागरिकों के मौलिक अधिकारों से जुड़ा हुआ सवाल है और इस बाबत गोपनीयता के अधिकार के रक्षार्थ सुप्रीम कोर्ट के आदेश भी मौजूद हैं। निजता के अधिकार को सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ नागरिकों के मौलिक अधिकारों में शामिल कर चुकी है। शायद इसी तथ्य को देखते हुए डा. .स्वामी कहते हैं कि '' मुझे उम्मीद हैं कि सुप्रीम कोर्ट आधार कार्ड को रद्द कर देगी '' यह भी गौरतलब है कि मोदी सरकार ने आधार को कानूनी जामा पहनाने के लिए वित्त विधेयक लाकर कानून बना चुकी है । आधार पर केवल पश्चिम बंगाल विधानसभा में आवाज उठी है और इसके खिलाफ सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया। प्रस्ताव पारित किया गया कि केंद्र को प्रत्यक्ष लाभ अंतरण योजना से आधारकार्ड को जोड़ने का अपना फैसला तत्काल वापस लेना चाहिए। लोकसभा में 3 मार्च 17 को पेश होने के बाद से संविधान के अनुच्छेद 110 के तहत लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन ने आधार विधेयक 2016 को धन विधेयक होने का प्रमाण पत्र दे दिया और इसे पारित कर राज्य सभा भेजा गया । यह संविधान और कानून सम्मत नहीं है, लेकिन यही एकमात्र ऐसा कानून है, जो संसद, सुप्रीमकोर्ट के अनुमोदन के बिना जबरन लागू किया गया। सुप्रीमकोर्ट द्वारा इसे अनिवार्य न ठहराए जाने और कुछ चीजों के लिए भी ऐच्छिक ठहराए जाने पर भी इसकी लगातार अवहेलना करके बैंकों, रसोई गैस की दुकानों और अन्य सरकारी कार्यालयों में वर्षो तक इसकी मांग की जाती रही और अब तो कानूनन आधार कार्ड को अनिवार्य कर दिया गया। लोगों ने मजबूर होकर आधार कार्ड बनवाए। फिर भी सुप्रीमकोर्ट में कह दिया गया कि लोगों ने स्वेच्छा से आधार कार्ड बनवाए हैं। राज्यसभा में भी विधेयक के धन विधेयक चरित्र पर सवाल उठा। राज्य सभा ने विधेयक में पांच संशोधन किये थे, जिनमें से एक इसे अनिवार्य न बनाना था। लोकसभा ने राज्यसभा के संशोधन को मानने से मना कर दिया और उसे मूल रूप में पारित कर दिया। उस समय लोकसभा के पूर्व महासचिव पी. डी. टी. आचारी ने कहा था कि आधार विधेयक 2016 को धन विधेयक नहीं माना जा सकता है। ''ऐसे विधेयक का सम्बन्ध टैक्स लागू करने, टैक्स खत्म करने, टैक्स बदलने आदि से नहीं है। न ही इसका सम्बन्ध सरकार द्वारा ऋण के संचालन या सरकार द्वारा कोई गारंटी लेने या सरकार की वित्तीय जिम्मेवारी में संशोधन से है। इस विधेयक का सम्बन्ध कंसोलीडेटेड फंड ऑफ इंडिया आदि से है। जो धन इस फंड में दिया जाता है या इससे निकला जाता है, वह आकस्मिक है। यह विनियोग विधेयक से संबंधित नहीं हो सकता। ''भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी'' के डी. राजा ने भी इसी प्रकार की बात कही थी । उन्होंने राज्यसभा में कहा था कि आधार विधेयक 2016 धन विधेयक बिलकुल नहीं है । धन विधेयक के सदर्भ में वित्त मंत्री अरुण जेटली ने कहा कि कोई भी शक्ति लोकसभा के धन विधेयक प्रमाण पत्र पर सवाल नहीं उठा सकती। आधार विरोधियों का आज भी मानना है कि इसका सीधा फायदा पूंजीपतियों को होगा। इसके लिए सरकार का छिपा हुआ इरादा है। पूरे देश को एक बड़ी दूकान में तब्दील करना। नन्दन नीलेकणे ने जो भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण(UIDAI, अध्यक्ष थे उन्होंने एक अवसर पर कहा था कि ''भारत के एक तिहाई उपभोक्ता बैकिंग और सामाजिक सेवा की पहुंच से बाहर हैं। ये लोग गरीब हैं, इसलिए खुद बाजार तक नहीं पहुंच सकते । पहचान (आधार, नंबर मिलते ही मोबाइल फोन के जरिए इन तक पहुंचा जा सकता है (नेल्सन कंपनी के 'कंज्यूमर 360') कार्यक्रम में उनकी बात की व्याख्या भी की गई। नेल्सन के तत्कालीन मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने कहा कि '' आधार सिस्टम से कंपनियों को फायदा पहुंचेगा'' उल्लेखनीय है, इस प्रकार का बायोमेट्रिक कार्ड संसार के किसी बड़े देश में उपलब्ध नहीं है। अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटेन आदि किसी भी देश में बायोमेट्रिक पहचान पत्र नहीं है। ब्रिटेन में इसे लागू किये जाने को लेकर कुछ वर्ष जरूर काम हुआ, लेकिन यह आखिरकार नाकाम साबित हुआ और इस परियोजना को रोक देना पड़ा। भारतीय सुप्रीमकोर्ट ने निजता के अधिकार को संविधान के अनुच्छेद-21 के तहत मिले जीवन और व्यक्तिगत आजादी के अधिकार के तहत एक मौलिक अधिकार माना है। अमेरिकी नागरिकों को भी यह अधिकार प्राप्त है, हालाँकि यह अधिकार उन्हें बहुत विलंब से मिला। अमेरिका में अदालतों ने इस अधिकार की रक्षा 19वीं सदी के अंत तक नहीं की क्योंकि कॉमन लॉ ने इसे मान्यता नहीं दी थी। इसे मान्यता तब मिली जब चार्ल्स वारेन तथा लूई ब्रैंडाइस ने हार्वाड लॉ रिव्यू(1890) में एक ऐतिहासिक लेख लिखा- 'द राइट टू प्राइवेसी'। निजता के अधिकार से संबंधित सैकड़ों मामले अमेरिकी अदालतों के समक्ष आये। पहली बार इस मामले में न्यूयॉर्क ऐपेलेट कोर्ट ने रॉबर्सन बनाम रोचेस्टर फोल्डिंग बॉक्स कम्पनी (1902) में इस पर विचार किया और प्रतिवादी को इस अधिकार के उल्लंघन के लिए दोषी करार दिया। फिर ग्रिसवर्ल्ड मामले (1965) में जस्टिस डगलस ने कहा कि भले ही बिल ऑफ राइट्स में इस अधिकार का स्पष्ट उल्लेख नहीं है, यह अन्य अधिकारों में निहित है। अमेरिका में ' आधार ' नहीं पाया जाता। भारतीय सुप्रीमकोर्ट ने आर. बनाम गोविंद (1975) विवाद में अमेरिकी अदालत के स्टैंड का हवाला दिया था। यह सच है कि सार्वजनिक हित महत्वपूर्ण होते हैं , परन्तु ' आधार ' के मामले में पुख्ता तौर पर ' सार्वजनिक हित ' सामने नहीं आ सका है। आकड़ों आदि के दुरूपयोग का संशय अलग से बना हुआ है। इसके विवरण के दुरूपयोग को लेकर शंकाएं भी सामने आती रही हैं। नन्दन नीलेकणे के अमेरिकी उद्योगपतियों से गहरे रिश्ते प्रकाश में आए थे, हालाँकि अब उनका पहचान प्राधिकरण से संबंध नहीं है, फिर भी वे उसके बारे में सब कुछ जानते हैं। इस प्राधिकरण ने पहचान पत्र बनाने और डाटा संग्रहण के लिए खासकर तीन कंपनियों - एल - 1 आईडेंटिटी सोल्यूशन, एसेंचर और महेंद्रा सत्यम - मोर्फो को भी लगाया है। इन कंपनियों के बड़े अधिकारियों में ऐसे लोग भी हैं, जिनके अमेरिकी खुफिया एजेंसी सी आई ए और अन्य सैन्य संगठनों से संबंध हैं। कंपनी बोर्ड में जार्ज टेनेट भी हैं, जो सी आई ए के पूर्व निदेशक हैं। ये कंपनियां भारतीय नागरिकों के आंकड़ों का मनचाहा इस्तेमाल कर सकती हैं। आधार परियोजना दुनिया की सबसे बड़ी बायोमैट्रिक संग्रहण और पहचान परियोजना है, जिसमें इसके स्वामित्व, प्रौद्योगिकी और निजता से जुड़े खतरे शामिल हैं। पहले एक संसदीय समिति कह चुकी है कि आधार परियोजना में उद्देश्य की स्पष्ट्ता का अभाव है और अपने क्रियान्वयन में यह दिशाहीन है। आधार कानून में भी स्पष्टता का घोर अभाव है। जहाँ तक आधार की विश्वसनीयता का संबंध है, गाय, कुत्ता आदि के भी आधार कार्ड बन चुके हैं। हनुमान जी का भी आधार बना है। एक आदमी के दो आधार कार्ड बनाये जा चुके हैं और कई ऐसे देशवासी हैं, जिनके फिंगर प्रिंट न उभरने के कारण आधार कार्ड नहीं बन पाए हैं और वे सरकारी दफ्तरों के चक्कर लगाने के लिए विवश हैं। उम्रदराज लोग फिंगर प्रिन्ट के न आने से आधार कार्ड की सुविधा से वंचित हैं और सभी को डर सताने लगा है कि कहीं वोट देने समेत अन्य अधिकारों और सुविधाओं से वंचित न हो जाएं। बहराइच के मोहल्ला बख्शीपुरा निवासी पंबागीश पाल ने बताया कि मतदाता परिचय पत्र के लिये फॉर्म भरकर फिंगर प्रिंट देने गए तो मशीन पर फिंगर प्रिंट ही नहीं आया और उनको बैरंग वापस लौटना पड़ा। इस मोहल्ले के ही बड़ी संख्या में 65 से 85 वर्ष के उम्र के लोग आधार कार्ड की सुविधा से वंचित हैं। इसके अलावा मोहल्ला मीरारवेल पुरा निवासी सेना से रिटायर्ड बनवारी लाल (65) ने बताया कि फॉर्म भरकर आधार कार्ड बनवाने का उपक्रम किया तो फिंगर प्रिंट न आने की बात कहकर कैंप से लौटा दिया गया। यही हाल उनकी मां फूलमती (85) के साथ भी हुआ। इतना ही नहीं, नगर समेत समूचे जिले में बड़ी संख्या में उम्रदराज लोग फिंगर प्रिंट के न आने से आधार कार्ड जैसी महत्वपूर्ण सुविधा से वंचित हैं। यह परेशानी उत्तर प्रदेश में ही नहीं, दूसरे राज्यों में भी सामने आ रही है। आधार कार्ड बनाने के लिए फिंगर प्रिंट और आंखों की पुतलियों की भी स्कैनिंग की जाती है। उम्रदराज लोगों के हाथ घिस जाने की वजह से फिंगर प्रिंट नहीं आ पा रहे हैं। अत: आशा की जाती है कि सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ इस मामले के विभिन्न पहलुओं के मद्देनजर अपना निर्णय सुनाएगी।

साभारwww.bharatiyasanvad.com से

सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक श्री बलदेव शर्मा द्वारा ऋचा प्रिंटर्ज एण्ड पब्लिशर्ज़ रिवोली बस अड्डा लक्कड़ बाजार शिमला से प्रकाशित व मुद्रित दूरभाष: 0177-2805015, 94180-15015 फैक्स: 2805015

क्या भ्रष्टाचार के खिलाफ कोई भी दल सत्ता में आकर कारवाई कर सकेगा

शिमला/शैल। कांग्रेस और भाजपा के घोषणापत्रों में यह दावा किया गया है कि भ्रष्टाचार किसी भी स्तर पर कतई बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। कांग्रेस ऐसी शिकायतों का निवारण करने के लिये एक आयुक्त नियुक्त करेगी। भाजपा इसके लिये आयोग का गठन करेगी। कांग्रेस-भाजपा के चुनाव घोषणा पत्रों पर आम आदमी ने कितना चिन्तन - मनन किया होगा इसका अन्दाजा लगाना कठिन है। क्योंकि दोनों दलों ने जितने वायदे अपने घोषणा पत्रों में कर रखे हैं उन्हे पूरा करने के लिये धन कहां से आयेगा इसका जिक्र किसी ने भी नहीं किया है। भाजपा ने पानी पर प्रति क्यूबिक मीटर दस पैसे का कर लगाकर 600 करोड़ का राजस्व जुटाने का दावा किया है। लेकिन इस दस पैस के कर से मंहगाई पर कब कितना असर पड़ेगा इसका कोई जिक्र नहीं है। विकास के महत्वपूर्ण कार्यो के लिये पी पी पी मोड़ पर विदेशी फण्ड का प्रबन्ध किया जायेगा यह भी वायदा किया गया है। लेकिन इसके और परिणाम क्या होंगे इस पर कुछ नहीं कहा गया है। कांग्रेस कृषि, बागवानी, पशुपालन आदि सारी योजनाओं पर 90% सब्सिडी देगी और छोटे और सीमान्त किसानों को एक लाख ऋण ब्याज मुक्त देगी तथा प्रतिवर्ष 30000 छात्रों को लैपटॉप देगी यह वायदा किया गया है। लेकिन इन वायदों को पूरा कैसे किया जायेगा इसका कोई जिक्र नहीं है। दोनों दलों के घोषणा पत्रों में जो वायदे किये गये हैं उन्हे पूरा करने के लिये या तो कर्ज का सहारा लिया जायेगा या फिर जनता पर करों का भार बढ़ाया जायेगा। क्योंकि वायदे पूरे करने के लिये धन चाहिये जो सरकार के पास है नहीं और केन्द्र इतना दे नहीं सकता क्योंकि उसकी भी कुछ वैधानिक सीमायें रहेंगी।

घोषणा पत्रों का यह जिक्र इस समय इसलिये आवश्यक है कि कल जो भी सरकार आयेगी वह अपने घोषणा पत्र से बंधी होगी। आम आदमी को अपेक्षा रहेगी कि सरकार के आते ही इन पर अमल शुरू हो जायेगा। इस अमल की आम आदनी को कितनी कीमत चुकानी पड़ेगी इसके लिये उसे पहले ही दिन से सजग रहना पड़ेगा। इस सजगता में आम आदमी यदि सरकार के भ्रष्टाचार को लेकर किये गये वायदों पर ही सरकार को समय-समय पर सचेत करता रहेगा तो यही एक बड़ा काम होगा। दोनों दलों ने भ्रष्टाचार कतई बर्दाश्त न करने का वायदा किया है। भ्रष्टाचार के खिलाफ कारवाई करने के लिये सरकार के पास विजिलैन्स का पूरा तन्त्र उपलब्ध है। लेकिन वीरभद्र के इस शासन काल में विजिलैन्स ने भ्रष्टाचार के किसी बड़े मामले पर हाथ डाला हो और उसमें सफलता हासिल की हो ऐसा कोई मामला सामने नहीं आया है। ऐसा नहीं है कि विजिलैन्स के पास कोई बड़ा मामला आया ही न हो बल्कि वास्तव में बड़े मामलों पर कारवाई करने से यह ऐजैन्सी बचती रही है। हिमाचल को विद्युत राज्य के रूप में प्रचारित प्रसारित किया जाता रहा है बल्कि इसी प्रचार के कारण यहां पर उद्योग आये हैं । लेकिन आज प्रदेश की विद्युत परयोजनाएं प्रदेश को लाभ देने के स्थान पर लगातार नुकसान दे रही हैं। विद्युत से हर वर्ष आय में कमी होती जा रही है यह कमी क्यों हो रही है इसकी ओर कोई ध्यान नही दिया जा रहा है।

इस परिदृश्य में यह स्मरणीय है कि प्रदेश में विद्युत में जे.पी. उद्योग समूह एक बड़ा विद्युत उत्पादक है लेकिन जितना बड़ा यह उत्पादक है राजस्व को लेकर इसके खिलाफ उतनी ही बड़ी शिकायतें भी हैं। स्मरणीय है कि भाजपा ने अपने ही एक आरोप पत्र में जे.पी. के सीमेंट प्लांट में 12 करोड़ का घोटाला होने का आरोप लगाया है। जे.पी. के दूसरे प्लांट को लेकर प्रदेश उच्च न्यायालय के आदेशों पर एक एसआई टी गठित हुई थी लेकिन उसका परिणाम क्या हुआ है इसका आज तक कोई पता नही है। जे. पी. को 1990 में जो बसपा परियोजना दी गयी थी उसका 92 करोड़ वसूलने की बजाये बट्टे खाते में डाल दिया गया है। सीएजी इस पर एतराज उठा चुका है। लेकिन सरकार में कोई कारवाई नही हुई है। जे.पी. ने दूसरी परियोजना को 900 मैगावाट से अपने ही स्तर पर 1200 मैगावाट कर लिया और इस 300 मैगावाट का कोई अपफ्रन्ट प्रिमियम आज तक नही वसूला गया है । इसी तरह जो विद्युत परियोजनाएं विद्युत बोर्ड की अपनी हैं उनमें एक लम्बे अरसे से रिपेयर के नाम पर हर वर्ष हजारों घन्टों का शट डाऊन दिखाया जा रहा है। स्वभाविक है जो परियोजना इतना लम्बा समय बन्द रहेंगी उसमें उत्पादन नही होगा और प्रदेश को राजस्व की हानि होगी। निजि क्षेत्र की परियोजनाओं में रिपेयर के नाम पर कभी भी 8-10 घन्टे से ज्यादा का शटडाऊन नही देखा गया है। इस शटडाऊन को लेकर पूरे दस्तावेजों के साथ विजिलैन्स में लम्बे समय से शिकायत लंबित पड़ी है। विद्युत बोर्ड के अपने ही सूत्रों के मुताबिक प्रतिदिन कई करोड़ो का घपला हो रहा है। सरकार ने भी मान लिया है कि इसमें कहीं कोई लापरवाही हो रही है परन्तु कोई कारवाई नही हो रही है। इसलिये आज दोनों दलों के दावों के संदर्भ में यह मामला सामने रखा जा रहा है।

विद्रोह और भीतरघात के खिलाफ कारवाई के मायने सवालों में

शिमला/शैल। मतदान के बाद कांग्रेस और भाजपा का शीर्ष नेतृत्व जहां चुनाव परिणामों को लेकर अपने-अपने आंकलनों में जुटे हैं वहीं पर दोनों पार्टीयां अपने-अपने विद्रोहियों और भीतरघातियों के खिलाफ कारवाई भी करने जा रही है। क्योंकि दोनों पार्टीयों को इन विद्रोहीयों और भीरतघातियों से नुकसान पहुंचा है। दोनों पार्टीयों के आधा - आधा दर्जन विद्रोही अन्त तक बतौर आज़ाद उम्मीदवार चुनाव मैदान में बने रहे हैं। यह विद्रोही भले ही स्वयं न जीत पायें लेकिन अधिकृत उम्मीदवारों को अवश्य नुकसान पंहुचा सकते हैं यह माना जा रहा है। जहां एक ही चुनाव क्षेत्र में दोनों दलों के विद्रोही बतौर आज़ाद उम्मीदवार मैदान में बने रहे हैं वहां किसी आज़ाद को सफलता मिल सकती है इसकी संभावना भी बराबर है। यह विद्रोही कहां- कहां रहे हैं? इस सवाल की पड़ताल करने से पूर्व यह समझना बहुत आवश्यक है कि दोनों दलों में विद्रोह की स्थिति आयी ही क्यों।

सत्तारूढ़ कांग्रेस में मुख्यमन्त्री वीरभद्र सिंह और संगठन प्रमुख सुक्खु के बीच जिस तरह का टकराव सत्ता संभालने के पहले ही दिन से शुरू हुआ था वह चुनावों तक बराबर बना रहा है। लेकिन चुनावों में जब कुछ वीरभद्र के विश्वस्त माने जाने वाले निर्दलीयों के रूप में चुनाव मैदान में समाने आ गये तब मुख्यमन्त्री पर अपरोक्ष में अंगूलियां उठना शुरू हो गयीं। विद्रोहियों को आर्शीवाद देने और अधिकृत उम्मीदवारों को समर्थन न देने आक्षेप शिमला अर्बन और ठियोग विधानसभा क्षेत्रों में उस समय सामने आ गया जब एसआईडीसी के उपाध्यक्ष अतुल शर्मा को पार्टी विरोधी गतिविधियों के लिये संगठन से निष्कासित किया गया। वीरभद्र ने इस निष्कासन का खुले रूप से विरोध करते हुऐ इसे अन्याय करार दिया है। इससे यह आशंका व्यक्त की जा रही है कि कुछ पार्टी विद्रोहियों को वीरभद्र का समर्थन हालिस है। माना जा रहा है कि चुनावों के परिणाम आने के बाद एक बार फिर संगठन और वीरभद्र में खुले टकराव की नौबत आयेगी।

इसी तरह अगर भाजपा के भीतर उभरे विद्रोह का आंकलन किया जाये तो इसके लिये प्रदेश के स्थानीय नेताओं के हितों के अघोषित टकराव के साथ ही हाईकमान की नीति को भी बराबर का जिम्मेदार माना जा रहा है। केन्द्र में भाजपा की सरकार बनने के बाद जब कई राज्यों में भी पार्टी की सरकारें बन गयी तो स्वभाविक रूप से कार्यकर्ताओं का मनोबल और बढ़ गया। इस मनोबल के बढ़ने के साथ ही उनकी अपनी महत्वकांक्षाए भी बढ़ी और वह उम्मीद करने लगे की सगंठन टिकटों के आवंटन में उन्हें भी तरजीह देगा। लेकिन जब टिकटों के लिये आवेदन किये जाने के पुराने चलन को नकार कर हाईकमान ने अपने ही सर्वे के आधार पर टिकट देने का फैसला लिया तो उससे स्थिति बदल गयी। लेकिन यह स्थिति उस समय और विकट हो गयी जब कांग्रेस से चुनावों के दौराने कुछ लोगों को पार्टी में शामिल करवाकर उनको टिकट थमा दिये गये। इसी के साथ यह जगजाहिर हो चुका था कि टिकट आंवटन में प्रदेश के बड़े नेताओं की राय को भी बड़ा अधिमान नही दिया गया है। फिर पार्टी बिना मुख्यमन्त्री का चेहरा घोषित किये चुनाव लडेगी इस फैसले को चुनाव के अन्तिम चरण में बदल दिया गया। धूमल को नेता घोषित किये जाने से पहले कार्यकर्ताओं और जनता में यह अप्रत्यक्ष प्रचार हो चुका था कि भाजपा में अगला मुख्यमन्त्री जेपी नड्डा होंगे। धूमल के घोषित होने के साथ ही फिर पार्टी के भीतरी समीकरणों में बदलाव आया और इससे अपनी डफली अपने राग वाली स्थिति बन गयी।

इस परिदृश्य में यह स्पष्ट हो जाता है कि जब पार्टीयों का शीर्ष नेतृत्व अपने को ही सर्वेसर्वा मानकर अपने निर्णयों पर सार्वजनिक सहमति तैयार करने की बजाये उन्हे एक तानाशाह की तरह संगठन पर थोपने लग जाता है तब यह स्थितियां विद्रोह और भीतरघात की शक्ल लेकर सामने आती हैं फिर पार्टीयां जब ऐसे लोगों के खिलाफ निष्कासन के फैसले लेती है तो उन पर अन्त तक अमल नही कर पाती है। 2012 के चुनावों में भी दोनों पार्टियों ने ऐसे लोगों के खिलाफ निष्कासन की कारवाई को अंजाम दिया था। लेकिन इन चुनावों के आते - आते सबको फिर से शामिल कर लिया गया। भाजपा ने तो कांग्रेस से चुनावों में नेताओं को तोड़कर अपने टिकट थमाये हैं। ऐसे में यह सवाल उठना स्वभाविक है कि यदि किसी भी दल को बहुमत नही मिल पाता है और निर्दलीयों के सहयोग से सरकार बनाने की नौबत आती है तो क्या दल उन्हे अपने में शामिल करने से परहेज करेंगे। उस समय सरकार बनाने के लिये यह विद्रोह और भीतरघात सब बीते वक्त की बात हो जायेगी और इन आजाद लोगों को मंत्री बनाया जायेगा। नगर निगम शिमला में सता के लिये अभी ही भाजपा यह सब कर चुकी है। इसलिये आज विद्रोह और भीतरघात के नाम पर कारवाई किये जाने का तब तक कोई अर्थ नही रह जाता है जब तक सता का लालच बना रहेगा।